ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-5* August- 2021
Anthology : The Research

भारत वर्ष में प्रजननशीलता एवं आर्थिक विकास

Fertility and Economic Growth

Paper Submission: 14/08/2021, Date of Acceptance: 24/08/2021, Date of Publication:25/08/2021

आर. सी. रणा
निर्देशक कोचिंग संचालक,
अर्थशास्त्र विभाग,
विनोबा भावे विश्वविधालय,
हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

सारांश

विश्व के अधिकांश अर्द्धविकसित देशों में जनसंख्या विस्फोट के कारण वहाँ की आर्थिक संबृद्धि के लिए जनंसख्या को नियंत्रित करना अति आवश्यक है। देश की जनसंख्या को निर्धारित करने वाले तीन तत्वों (1) जन्मदर (2) मृत्युदर एवं (3) प्रवास में से जन्मदर को घटाकर आर्थिक संबृद्धि के उदेश्य को प्राप्त करना सर्वोतम उपाय होगा, क्योंकि मृत्यु दर एवं प्रवास में वृद्धि करना अनैतिक एवं अमानवीय होगी। जन्मदर को घटाने का एकमात्र व्यावहारिक उपाय है प्रजनन दर में कमी करना।

जनसंख्या में वृद्धि दर ऊँची होने से देश में भूमि-श्रम अनुपात प्रतिकूल होने लगता है। भूमि पर जनसंख्या का बोझ बढ़ने लगता है, कृषि की उत्पादकता घटने लगती है, परिणामस्वरूप कृषि आधारित की उत्पादकता भी प्रतिकूल होने लगता है। दूसरी ओर जनसंख्या की तीव्र वृद्धि का कुप्रभाव बचत एवं विनियोग पर भी प्रभाव पड़ता है।

इसलिए प्रजनन दर को घटाकर जनसंख्या वृद्धिदर घटाना आवश्यक होगी, प्रजननशीलता के प्रमुख निर्धारक तत्व प्रजनन की अवधि, स्त्रियों की भूमिका, स्वस्थ्य वातावरण, प्रजनन संबंधि , प्रजनन की अवसर क्षमता आदि है।

भारतवर्ष में ऊँची प्रजननदर का मुख्य कारण कृषि का प्रधानता, व्यापक गरीबी, कम उम्र में शादी, अंधविश्वास, शिक्षा का अभाव आदि है। भारतवर्ष में आजादी के बाद से ही प्रजनन दर घटाने के लिए परिवार नियोजन के कार्यक्रम को सरकारी स्तर पर प्रारंभ किया गया। भारत में जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए शहरीकरण, लोगों में जागरूकता का प्रसार तथा आर्थिक विकास ही प्रमुख कारण है। जब बच्चे परिसम्पति नहीं बल्कि दायित्व समझे जाने लगेंगें तो लोग स्वेक्षा से परिवार नियोजन कार्यक्रम को अपनानें लोंगो। परिवार नियोजन कार्यक्रम को मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में ही क्रियान्वयण सरकारी नीति की प्रथमिकता होनी चाहिए।

Due to population explosion in most of the underdeveloped countries of the world, controlling population is very important for their economic growth. Deducting the birth rate from the three elements that determine the population of the country, (1) birth rate, (2) death rate and (3) migration, would be the best way to achieve the objective of economic growth, because increasing the death rate and migration would be immoral and inhuman. . The only practical way to reduce the birth rate is to reduce the fertility rate.

Due to the high rate of growth in population, the land-labour ratio in the country becomes unfavourable. The burden of population on the land starts increasing, the productivity of agriculture starts decreasing, as a result the productivity of agriculture based industries also starts getting adverse. On the other hand, the rapid growth of population also has an adverse effect on savings and investment.

Therefore, it will be necessary to reduce the rate of population growth by reducing the fertility rate, the major determinants of fertility are the duration of reproduction, role of women, healthy environment, reproductive decisions, ability to reproduce, etc.

The main reason for high fertility rate in India is the predominance of agriculture, widespread poverty, early marriage, superstition, lack of education etc. Since independence in India, the program of family planning was started at the government level to reduce the fertility rate. Urbanization, spreading awareness among people and economic development are the main reasons to control population growth in India. When children start being considered as a liability, not an asset, then people will adopt the family planning program voluntarily. Implementation of family planning program mainly in rural areas should be the priority of government policy.

मुख्य शब्द प्रजनन दर , प्रजनन क्षमता, जन्म दर, आर्थिक वृद्धिदर
Fertility Rate, Fertility Rate, Birth Rate, Economic Growth Rate

प्रस्तावना

किसी देश की जनसंख्या का आकार एवं वृद्धि दर का उस देश के आर्थिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, और अर्द्धविकसित देशों में समान्यतः जनसंख्या का आकार एवं वृद्धि दर दोनांे ऊँचे होते हैं। इसलिए ऐसे देशों में जनाधिक्य होता है। किसी देश की जनसंख्या का आकार एवं वृद्धि दर उस देश की जन्म दर एवं मृत्यु दर पर निर्भर करता है। ऊँचे जन्म दर को घटाकर जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित किया जा सकता है। जन्म दर पूर्णतः प्रजनन दर पर निर्भर करता है। अगर प्रजनन दर को घटा दिया जाय तो जन्म दर घटेगी। जन्म दर घटने से जनसंख्या वृद्धि दर घटेगी तथा आर्थिक विकास गति तीव्र होने लगेगी। इस प्रकार प्रजनन दर को घटाकर आर्थिक विकास की दर को बढ़ाया जा सकता है। अतः प्रजनन दर एवं आर्थिक विकास के बीच विपरीत संबंध होता है।

अतः यह स्पष्ट हो जाता है की किसी देश की आर्थिक विकासकी दर उस देश की प्रजननशीलता पर निर्भर करती है।

$$\emptyset = \alpha(\varphi) - - - (I)$$
$$\varphi = \beta(f) - - - (II)$$
$$\therefore \emptyset = \emptyset(f) - - - (III)$$

जहाँ

$\emptyset$ = देश की आर्थिक विकास की दर

φ = देश की जनसंख्या वृद्धि दर

f = देश की प्रजननशीलता

किसी देश की आर्थिक संवृद्धि की दर तीन प्रकार की होती है

प्रगतिशील संवृद्धि (Progressive Growth)

राष्ट्रीय आय की वृद्धि दर जनसंख्या वृद्धि दर से ऊँची होती है। परिणामस्वरूप प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि होती है, तथा देश विकास के मार्ग पर बढ़ता चला जाता है।

$$\frac{\Delta\emptyset}{\emptyset} > \frac{\Delta\beta}{\beta}$$

जहाँ

$\emptyset$ = प्रगतिशील संवृद्धि

अधोगामी संवृद्धि (Regressive Growth)

इसके अंतर्गत राष्ट्रीय आय की वृद्धि दर जनसंख्या वृद्धि दर से कम होती है प्रतिव्यक्ति आय घटती जाती है, तथा देश की आर्थिक विकास की दर अधोगामी होती है।

$$\frac{\Delta\emptyset}{\emptyset} < \frac{\Delta\beta}{\beta}$$

$\emptyset$ = अधोगामी संवृद्धि

स्थिर संवृद्धि Stationary growth

राष्ट्रीय आय की वृद्धि दर जनसंख्या वृद्धि के समान होती है तो प्रतिव्यक्ति आय स्थिर रहती है।

$$\frac{\Delta\emptyset}{\emptyset} = \frac{\Delta\beta}{\beta}$$

जहाँ

$\emptyset$ = स्थिर संवृद्धि

जनसंख्या के अध्ययन में

आर्थिक विकास में जनसंख्या की भूमिका का अध्ययन करने के लिए जनसंख्या की गुणवता एवं देश की जनांकिकीय स्थिति का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। जनसंख्या की ऊँची वृद्धि दर से विकास की दर में गतिरोध उत्पन्न होती है । अगर अर्थव्यवस्था में जनाधिक्य है, तो प्रजनन दर के साथ आर्थिक विकास का विपरित संबंध होता है। जबकि अर्थव्यवस्था में अगर जनाभाव हो तो प्रजनन दर का आर्थिक विकास के साथ सीधा संबंध होता है। अगर देश में आदर्श जनसंख्या हो तो आर्थिक विकास के साथ जनसंख्या की गुणवता पर निर्भर करेगी।

जनसंख्या संक्रमण का सिद्धान्त

जनसंख्या संक्रमण के प्रथम अवस्था में अर्थव्यवस्था में व्याप्त गरीबी एवं बेरोजगारी के कारण बच्चों को परि -संपत्ति माना जाता है। जिससे जन्म दर ऊँची होती है। जबकि स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव के साथ-साथ कुपोषण एवं अशिक्षा के कारण मृत्यु दर भी उँची होती है, जिससे जनसंख्या की कोई समस्या नहीं होती ।

भारत वर्ष में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं की मृत्यु दर ऊँची होती है। बचपन में (एक वर्ष से पाँच वर्ष की आयु तक) लड़कों की अपेक्षा लड़कियों की मृत्यु दर अधिक है।, क्योंकि टीम डायसन के अनुसार 1 विकासशील एवं अविकसित देशों में कन्या भ्रुण या हत्या के स्पष्ट प्रमाण महजूद है। वस्तुतः 1990 से हीं इस कुप्रथा में वृद्धि हुई है, क्योंकि, scarning एवं अल्ट्रासाण्ड तकनीकों के कारण अब गर्भ में हीं बच्चों का लिंग का पता लगाना असान हो गया है । यधपि भारत में गर्भ में लिंग की जानकारी देना कानुनन अपराध घोषित कर दिया गया है। जीन ट्रेज एवं अमत्र्य सेन 2 के अनुसार ऊँचे मृत्यु दर का कारण लड़कियों के स्वास्थ्य आहार एवं संबंधित आवश्यकताओं की उपेक्षा किया जाना है, खास तौर पर उत्तरी भारत में।

जनसंख्या संक्रमण की द्वितीय अवस्था में जन्म दर लगभग प्रथम अवस्था के समान ही अपरिवर्तित रहता है, क्योंकि जन्म दर लोगों के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। लोगों के दृष्टिकोण में दीर्घकाल में परिवर्तन होता है। लेकिन स्वास्थ्य सुविधाओं एवं शिक्षा में प्रसार के कारण मृत्यु दर घट जाती है। जिससे जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि होती है, तथा अर्थव्यवस्था जनसंख्या विस्फोट (च्वचनसंजपवद मगचसवेपवदद्ध की स्थिति में पहुँच जाता है ।

जनसंख्या संक्रमण की तृतीय अवस्था में जन्म दर एवं मृत्यु दर दोनों निम्न होते हैं। जिससे जनसंख्या की कोई समस्या नहीं होती है। वर्तमान समय में अधिकांश देश तथा भारत वर्ष में भी जनसंख्या संक्रमण की द्वितीय अवस्था में है, जिसके कारण जनसंख्या वृद्धि दर ऊँची है जो, आर्थिक विकास के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा उत्पन्न करती है ।

जनसंख्या वृद्धि दर के निर्धारक तत्व

किसी देश की जनसंख्या का आकार एवं वृद्धि दर को निर्धारित करने वाले प्रमुख तीन तत्व होता है

1) प्रजनशीलता (Fertility

(2) मरनशीलता Mortality)

(3) प्रवाश Migration

उपर्युक्त तीनो तत्वो में प्रजनशीलता को घटाकर अथवा मरनशीलता को बढाकर अथवा प्रवाश को बढ़ाकर जनसंख्या को नियंत्रित किया जा सकता है द्वितीय तृतीय तत्व अमानवीय एवं अनैतिक है । इस देश को उन दोनों को छोड़ कर प्रजनशीलता को घटाकर जनसंख्या वृद्धि दर नियंत्रित करना सर्वोतम होगा ।

जनसंख्या की तीव्र वृद्धि पर नियंत्रण

जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए प्रजनशीलता को यथासंभव घटाकर जन्म दर को नियंत्रित करना सर्वोतम उपाय माना जाता है।

प्रजनशीलता

प्रजनन आयु वर्ग की महिलाओं के द्वारा किसी दी हुई वर्ष में सजीव जन्में औसत शिशुओं की संख्या की माप प्रजनशीलता कहलाती है। जबकि सन्तानउत्पादक्ता शक्ति को प्रजनन क्षमता कहा जाता है ।

प्रजनशीलता की माप (Measurement of fertility) जबकि प्रजनशीलता के अनेक माप है जिनमें से दो प्रमुख है

(a) सामान्य प्रजनन दर (General Fertility) GFR

$$GFR=\frac{\beta}{pi} \times k$$

I

GFR= समान्य जन्म दर

β=एक वर्ष की अवधि (1जनवरी से 31 दिसंबर) में कुल बच्चों की संख्या

Pi =प्रजनन आयु वर्ग (15-49) उम्र अंतराल में (1 जुलाई) पर कुल जनसंख्या

k=स्थिरांक (प्रतिशत में 100) प्रति हजार में 1000

(1 जुलाई) पर कुल जनसंख्या

k= स्थिरांक (प्रतिशत में 100) प्रति हजार में 1000

(b) कुल प्रजनन दर Total) (Fertility Rate) (TFR)

पूरे प्रजनन अवधि में कोई स्त्री जितने शिशुओं को जन्म देती है । उसे कुल प्रजनन दर कहा जाता है। उदाहरण के लिए यदि एक स्त्री पूरे प्रजनन काल में दो बच्चों को जन्म देती है, तो प्रति स्त्री कुल प्रजनन दर दो बच्चें होंगे ।

$$TFR = \int_{15}^{49} \frac{\beta i}{pi} \times k$$

$$or \int_{15}^{49} \square =$$

$$TFR = \sum AS\beta R \times i$$

TFR= कुल प्रजनन

βi= एक वर्ष की अवधि में कुल जीवित जन्मों की संख्या

Pi=उसी वर्ष कुल जनसंख्या

K= स्थिरांक

ASβR=आयु उम्र विशिष्ट जन्म दर

i= वर्ष अंतराल

भारतीय जनसंख्या की सबसे बड़ी विशेषता यहाँ का गिरता हुआ निर्भरता अनुपात है। चीन की निर्भरता अनुपात बढ़ रहा है। कम निर्भरता अनुपात से भारत को तुलनात्मक लाभ प्राप्त होगा

तथा गिरते हुए निर्भरता अनुपात से हमारी प्रतिस्पर्धात्मक शक्ति में वृद्धि होगी।

भारत में प्रजनशीलता, जनसंख्या वृद्धि दर आर्थिक विकास की दर

जनसंख्या पर नियंत्रण के लिए आजादी के बाद से ही परिवार नियोजन कार्यक्रम को देश में सरकारी कार्यक्रमों के रूप में स्वीकार किया गया है अनेक प्रयासों के बाद भी हमारी जनसंख्या की वृद्धि दर बढ़ती गई, तथा हम 1970 के दशक से ही जनसंख्या विस्फोट की स्थिति से गुजरने लगे। गरीबी एवं बेरोजगारी के कारण जहँ बच्चों को परिसंपत्ति माना जाने लगा। क्योंकि छोटे उम्र से ही वे या तो गाँव में ही कुछ काम करके आय अर्जित करने लगते हंै अथवा अपने माता पिता के कृषि एवं अन्य कार्यों में सहयोग करने लगते है। दूसरी ओर बच्चों पर कोई व्यय जैसे शिक्षा पर, स्वास्थ्य सुविधाओं पर कम अथवा नगण्य होता है। इसलिए बच्चों को परिसंपत्ति माना जाता था। इस अवस्था में लोगों के दृष्टि कोण के कारण परिवार नियोजन कार्यक्रम मुख्यतः असफल रहा सिर्फ शहरी क्षेत्रों में ही कुछ हद तक सफल हो सका, जहाँ बच्चों को दायित्व माना जाता है। जनसंख्या संक्रमण की द्वितीय अवस्था में जहाँ जन्म दर लगभग समान रहता है मृत्यु दर में कमी होने लगती है। क्योंकि देश में धीरे-धीरे शिक्षा का प्रसार होने लगती है। क्योंकि देश के आर्थिक विकास का कार्यक्रम धीरे-धीरे गति पकड़ने लगती है देश मेें कुपोषण में कमी, तथा स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रसार के कारण मृत्यु दर में तेजी से गिरावट आने लगती है। अतः देश में घटते हुए मृत्यु दर एवं लगभग स्थिर जन्म के कारण देश में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिससे अर्थव्यवस्था पटरी से उतर सकती है।

निम्नलिखित तालिका से भारत की प्रमुख जनांकीय प्रवृतियाँ स्पष्ट होती हैं।

तालिका-1

वर्ष	जन्मदर (प्रति हजार)	जनसंख्या की औसत वार्षिक वृद्धि दर प्रतिशत में	कुल प्रजनन दर	प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय में वृद्धि दर (वर्तमान मुल्यों पर प्रतिशत में)
I	II	III	IV	V
1980—81	39.9	2.22	4.5	16.8
1990—91	29.5	2.16	3.6	14.3
2000—20001	25.4	1.97	3.1	5.1
2012—2013	21.4	1.64	2.45	18.5

निम्नलिखित तालिका में भारत वर्ष में जन्म दर, जनसंख्या की औसत वार्षिक वृद्धि दर, कुल प्रजनन दर तथा प्रतिव्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय विभिन्न वर्षो में प्रदर्शित करता है।

1. Government of India, census of India, Provisional Population Tables. Report 1 of 2011, Statement 2,P-41, and Statement 31-p-138
2. Central Statistical office quoted in Economic Survey 2014-15 vol II Table -1.2.A3 Gov. of India Ministry of Finance

उपर्युक्त तालिका संख्या 1 के II स्तम्भ से स्पष्ट है कि भारत वर्ष में 1980-81 में जन्म दर 39.9 प्रतिशत प्रति हजार थी जो घटकर 1990-91 में 29.5 2000-2001 में 25.4 तथा 2012-13 में 21.4 प्रति हजार हो गई। जबकि जनसंख्या औसत वार्षिक वृद्धि दर स्तम्भ प्प्प् में से 1980-81 में 2.2 प्रतिशत थी घटकर 1990-91 में 2.16, 2000-2001 में 1.97 तथा 2012-13 में 1.64 प्रतिशत हो गई। कुल प्रजनन दर स्तम्भ प्ट में दिखाया गया है 1980-81 में भारत में कुल प्रजनन दर 4.5 थी, जो घटकर 1990-91 में 3.6 पुनः 2000-2001 में 3.1 एवं 2012-13 में 2.45 हो गई। वर्तमान मूल्यों पर प्रति व्यक्ति कुल राष्ट्रीय आय 1980-81 में 16.8 थी जो घटकर 1990-91 में 14.3 जबकि 2000-2001 में 5.1 तथा 2012-13 में 18.5 हो गई।

तालिका का विशलेषण प्रजनन दर एवं जन्म दर

उपर्युक्त तालिका के स्तम्भ प्एप्प्ए एवं प्ट से स्पष्ट है की प्रजनन दर ही वास्तव में जन्म दर को प्रभावित करता है। प्रजनन दर घटती है, तो जन्म दर भी घटती है। 1980-81 में कुल प्रजनन दर 4.5 प्रतिशत थी, तो जन्म दर 39.9 प्रतिशत प्रतिहजार थी। कुल प्रजनन दर 1980-81 के अपेक्षा 1990-91, 2000-2001 तथा 2012-13 में घटकर क्रमशः 3.6,3.1 तथा 2.45 प्रतिशत हो गई तो जन्म दर भी क्रमशः 1990-91 में 29.5 प्रतिशत से घटकर 25.4 प्रतिशत प्रति हजार तथा 21.4 प्रतिशत हो गई।

इससे स्पष्ट है कि कुल प्रजनन दर एवं जन्म दर के बीच प्रत्यक्ष एवं सीधा संबंध होता है। अतः प्रजनन दर घटाने से जन्म दर में भी कमी आयेगी तथा प्रजनन दर में वृद्धि होने से जन्म दर में भी वृद्धि होगी ।

प्रजनन दर एवं जनसंख्या वृद्धि

कुल प्रजनन दर तथा जनसंख्या की औसत वार्षिक वृद्धि दर के बीच की प्रत्यक्ष एवं सीधा सहसंबंध होता है । 1980-81 में जब कुल प्रजनन दर 4.5 प्रतिशत थी, तो जनसंख्या की औसत वार्षिक वृद्धि दर 2.2 प्रतिशत थी। कुल प्रजनन दर जब 1990-91, 2000-2001 तथा 2012-13 में घटकर क्रमशः 3.6, 3.1 एवं 2.45 हो गई तो जनसंख्या की औसत वार्षिक वृद्धि दर भी घटकर क्रमशः 2.16,1.97 एवं 1.64 प्रति हो गई। अतः प्रजनन दर को विभिन्न प्रयासों से घटा दिया जाय तो जनसंख्या की औसत वार्षिक वृद्धि दर में क्रमशः कमी होगी ।

प्रजनन दर एवं आर्थिक विकास

अब हम प्रजनन दर का राष्ट्रीय आय में वृद्धि दर के साथ अध्ययन करते हैं, तो स्पष्ट हो जाता है की प्रारंभ में जब कुल प्रजनन दर 1980-81 में 4.5 थी तो भारत की प्रतिव्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय में वृद्धि दर (वर्तमान मुल्यों पर) 16.83 थी कुल प्रजनन दर जब 1990-91, में 2000-2001 तथा 2012-13 में क्रमशः 3.6, 3.1 तथा 2.45 हो गई। जबकि प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय में वर्तमान मुल्यों पर क्रमशः 14.3 प्रतिशत 5.1 प्रतिशत तथा 18.5 प्रतिशत हो गई।

यह बिल्कुल सत्य है, कि एक अर्द्धविकशित देश जो जनंख्या संक्रमण की द्वितीय अवस्था से गुजर रही होती है वहाँ जनसंख्या विस्फोट के कारण जनाधिक्य होता है । ऐसे देश में जनसंख्या का आकार वृहत होता है। जनसंख्या वृद्धि दर भी ऊँची होती है। इसलिए कृषि प्रधान देश होते हुए भी भूमि- श्रम अनुपात (संदक डमद तंजपवद्ध प्रतिकुल होता है। भूमि पर बोझ बढ़ता जाता है, तथा भूमि की उत्पादकता धीरे-धीरे घटने लगती है। कृषि उत्पादकता में उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होता है। भूमि की उत्पादकता घटने का कुप्रभाव सिर्फ भूमि पर हीं नहीं, बल्कि कृषि पर आधारित उद्योगों पर भी प्रतिकुल प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार जनसंख्या में तीव्र वृद्धि का प्रतिकूल प्रभाव कृषि एवं उद्योग दोनो क्षेत्रों पर पड़ता है। दूसरी ओर जनसंख्या की वृद्धि दर जब ऊँची होती है तो जनसंख्या का आकार भी वृहत होता है। इसके कारण राष्ट्रीय आय का अधिकांश भाग का उपभोग कर लिया जाता है । जिसका प्रतिकुल प्रभाव बचत एवं विनियोग पर पड़ता है, जो आर्थिक विकास के दर को अवरूद्ध कर देती है।[3]

इस प्रकार अर्द्धविकसित देशों में जहाँ जनाधिक्य की स्थिति पायी जाती है, वहाँ जनसंख्या की उँची वृद्धि दर को प्रजनन दर घटाकर कम नहीं किया गया तो आर्थिक विकास की दर घटती जायेगी तथा देश गरीबी के कुचक्र मे फंस जायेगा ।

अतः स्पष्ट हो जाता है की प्रजनन दर कारण तथा जन्म दर परिणाम है । प्रजनन दर को घटाकर जन्म दर को घटाया जा सकता है , तथा प्रजनन दर में अगर वृद्धि होगी तो जन्म दर भी बढ़ेगी। अतः प्रजनन दर एवं जन्म दर के बीच सीधा सहसंबंध होता है।

प्रजननशीलता के निर्धारक तत्व Determinants of Fertility

प्रजननशीलता की निर्धारक तत्व निम्नलिखित है-

प्रजनन की अवधि (Fertility Period)

कोई भी जीव सारी उम्र प्रजनन कार्य नहीं कर सकता। मनुष्यों में यह अवधि समान्यतः 15-49 वर्ष की आयु वर्ग मानी जाती है। प्रजनन की इसी अवधि में पुरूष में नर प्रजनन कोषिका अथवा शुक्राणु का निर्माण होता है, तथा स्त्री में सहमिलन से डिम्बाणु का निर्माण होता है, जिनके सहमिलन से 9 महिने मे मानव शिशु का रूपधारण करता है। प्रजनन की अवधि जितनी लम्बी होगी प्रजननशीलता उतनी अधिक होगी । दोनों के बीच सीधा संबंध होता है।

स्त्री की भूमिका (Role Of Women)

प्रजनन काल में स्त्री की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। पुरूष का एक भाग कार्य संसर्ग के माध्यम से पुरूष रस तत्व का उत्सर्जन करता है, जबकि स्त्री केवल शुक्राणु एवं डिम्बाणु से संश्लिष्ट कोशिका के निर्माण के साथ-साथ भ्रुण की संपूर्ण सुरक्षा उचित संवर्धन एवं जनन का भार भी प्रकृति कै द्वारा स्त्री को सौंपा गया है ।

अनुवांशिकता का प्रभाव (Like Begets Like)

Like Begets Like प्रजनन द्वारा उत्पन्न सभी जीवों की संतान अपने जनक के समान होता है । इसलिए मनुष्य की संतान सदा मनुष्य ही होते हैं ।

स्वस्थ्य वातावरण की भूमिका Role of Healthy Environment

वातावरण में अनेक छोटे-छोटे जीव जो लाखों की संख्या में जन्म लेते एवं मरते हैं, इसका कुप्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य पर पड़ता है, उससे मनुष्य की रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी होती हैं तथा मनुष्य की स्वस्थ्य प्रजननशीलता में बाधा उत्पन्न कर देती है । अतः मानवीय प्रजननशीलता के निर्धारक तत्व जैविक एवं सामाजिक दोनो होते हैं।

प्रजनन संबंधि निर्णय अवसर एवं क्षमता (Decision Opportunity and Efficiency)

एक अवधि में प्रजनन हमारे प्रजनन हेतु निर्णय अवसर एवं क्षमता पर निर्भर करता है। प्रजनन हेतु क्षमता का संबंध मनुष्य की प्रजनन क्षमता से है। यह पूर्णतः जैविक है । प्रजनन हेतु निर्णय एवं प्रजनन हेतु अवसर क्रमशः विवाह पूर्व त्यारी एवं विवाह से संबंधित के दोनो तत्व व्यवस्था से संबंधित है । जैसे पारिवारिक यौन संबंध, नौकरी में संतोष आदि पर निर्भर करता है।

प्रजननशीलता को प्रभावित करने वाले तत्व Factor Affecting Fertility

Prof. Davis एवं Black ने प्रजननशीलता के अध्ययन से समाजसास्त्रीय मॉडल का प्रतिपादन किया। निम्नलिखित तत्व प्रजननशीलता को प्रभावित करते है-

प्रजनन संबंधित क्रियाओं की संभावनाएँ

प्रजनन काल में सहवास को बनाए रखने में सहवास आरंभ करने के समय आयु उन स्त्रियों का अनुपात जो जीवन भर सहवास नहीं करती, अपनी इच्छा से इस क्रिया से अनुपस्थिति रहना अथवा परिस्थिति वस जैसे बिमारी, नपुन्सक्ता आदि कारणों से सहवास नहीं कर पाती।

गर्भधान की संभावना

गर्भधान की संभावना गर्भधान की शक्ति अथवा क्षमता एवं गर्भ निरोधकों का प्रयोग आदि पर निर्भर करता है ।

गर्भधान के समय एवं सफल जन्म को प्रभावित करने वाले तत्व

कभी-कभी प्राकृतिक कारणों से तो कभी अप्राकृतिक कारणों से भ्रुण की मृत्यु हो जाती है । अतः स्पष्ट है की प्रजननशीलता की दर में परिवर्तन योजनावद्ध ढ़ंग से किया जा सकता है।

भारत में प्रजननदर में वृद्धि के कारण

भारत में जन्म दर अभी भी ऊँची है । भारत सरकार के द्वारा इसे रोकने के अनेक प्रयास किये गये हैं जिससे जन्म दर को घटाया जा सके। जन्म दर को घटाने के लिए प्रजनन दर को घटाना आवश्यक है । 1961 में भारत में कुल प्रजनन दर (Total Fertility Rate) 6.11 प्रति महिला थी, जो 2001 तक घटते-घटते 3.50 प्रति महिला हो गई और 2013 में यह 2.3 प्रतिशत प्रति महिला रह गई। अतः भारत में प्रजनन दर में काफी कम हुई, फिर भी यह दर अभी भी ऊँची है।

कृषि की प्रधानता

भारत में ऊँची प्रजनन दर के अनेक आर्थिक एवं सामाजिक कारण हैं जिनमें निम्नलिखित प्रमुख है भारत एक कृषि प्रधान देश है यहाँ बच्चे बचपन से ही पशु को चराने , खेती की रखवाली करने एवं अन्य गृह कृषि कार्यों में अपने माता पिता का हाथ बटाने लगते हैं। इसलिए कृषक अधिक संतान को बुरा नहीं मानते। खेती में मुख्यतः श्रम- प्रधान तकनिक का प्रयोग किया जाता है । यहाँ बाल श्रम उपयोगी मानी जाती है ।

ग्रामीण श्रम जाँचसमिति 4 (Rural Labour Enquiry Community) ने लिखा है कि ष्कृषि के व्यस्त मौसम में अनेक अस्थानिय क्षेत्रों में श्रम की कमी हो जाने से श्रम बाजार में बाल श्रमिकों

की खपत हो जाती है ।

व्यापक स्तर पर गरीबी

भारत में ऊँची प्रजनन दर का एक महत्वपूर्ण कारण गरीबी है महम्मुद ममदानी 5 ने लिखा है ष् लोग इसलिए गरीब नही, है कि उनके परिवार बड़े, इसके विपरित, उनके परिवार इसलिए बड़े होते है क्योंकि वे भी गरीब है ।

विश्व बैंक के एक रिपोर्ट 6 के अनुसार भीष् गरीब माता-पिताओं के लिए बच्चों के परवरीश की लागत नीची होने के अनेक ठोस कारण है, बच्चों से आर्थिक एवं अन्य लाभ भी ज्यादा है, इसलिए ज्यादा बच्चा होना आर्थिक दृष्टि से विवेक पूर्ण है ।

विवाह की अनिवार्यता

अर्द्धविकसित देशों में विवाह एक धार्मिक एवं सामाजिक आवश्यकता है, बच्चों के विवाह को माता-पिता अपना कर्तव्य मानते है।

कम उम्र में शादी

अर्द्धविकसित देशों में खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में शादी कम उम्र में ही कर दी जाती है। जिससे प्रजनन अवधि बढ़ जाती है तथा प्रजनन दर में वृद्धि हो जाती है।

अंधविश्वास

अर्द्धविकसित देशों में लोग यह मानते है, कि संतान का जन्म ईश्वर की कृपा है। उसमें लोग हस्तक्षेप करना नहीं चाहते है। यह भी मानना है कि संतान के बिना मुक्ति नहीं मिलेगी।

अन्य कारण

उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त संयुक्त परिवार प्रथा, शिक्षा का अभाव, परिवार नियोजन के उपायों का सीमित प्रयोग आदि के कारण प्रजनन दर ऊँची होती है।

भारत में प्रजनन दर घटाने के लिए किये गये उपाय

भारत में जन्म दर घटाने के लिए सरकार ने अनेक नीतियों बनाकर प्रजनन दर घटाने का प्रयास किया गया। विश्व बैंक के एक अनुमान7 में 1990-2011 में भारत में पुर्नउत्पादनीय आयु के 55 प्रतिशत दंपतियों तक परिवार नियोजन कार्यक्रम पहुँचाया गया, जबकि इसी अवधि में चीन में पुर्नउत्पादनीय आयु के 85 प्रतिशत दम्पति परिवार नियोजन उपायों का इस्तमाल करते थे।

परिवार नियोजन कार्यक्रम Family Planning Programme

1951 से ही भारत सरकार परिवार नियोजन कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया तथा उसके बाद प्रत्येक पंचवर्षीय योजनाओं में बड़ी रकम का प्रावधान कर व्यय किया गया। यद्यपि हम अधिक सफल नहीं हो पाये। लेकिन सरकार अपना कार्यक्रम जारी रखी। छठी योजना के अंर्तगत जनसंख्या सम्बधि नीति से संबंध योजना आयोग द्वारा नियुक्त कार्यक्रम दल ने सिफारिश कि थी कि 1996 तक उस देश में शुद्ध पुर्नउत्पादनीय दर गिर कर 1.0 रह जायेगी जो दर 1980-81 1.67 थी इसके लिए (परिवार का औसत आकार 4.2 बालकों से घटाकर 2.3 करना होगा। (इ) जन्म दर को 33 प्रति हजार से घटाकर 21 प्रति हजार करना होगा। (ब) मृत्यु दर को 14 प्रति हजार से घटाकर 9 प्रति हजार तथा बाल मृत्यु दर को 129 प्रति हजार से घटाकर 21 प्रति हजार करना होगा।

1. 60 प्रतिशत दम्पतियों को परिवार नियोजन के दायरे में लाना होगा। जबकि वर्तमान में सिर्फ 35 प्रतिशत दम्पति परिवार नियोजन के दायरे में थे।
2. सातवीं योजना में परिवार नियोजन कार्यक्रम को अधिक सफलता मिली। आठवीं योजना में जन्म दर जो 1990 में 29.5 प्रति हजार थी, उसे घटाकर 26 लाने का लक्ष्य रखा गया। परिवार नियोजन कार्यक्रम को राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में मनाया जाने का लक्ष्य रखा गया परिवार नियोजन कार्यक्रम को अधिक व्यापक बनाने के लिए उसे स्वैच्छिक संगठनों को प्रोत्साहन देने की स्वीकृति दी गई।
3. वर्तमान समय में सरकारी दृष्टिकोण यह बना है कि लोग परिवार नियोजन कार्यक्रम को सरकार के सहयोग से क्रियान्वित करें। राष्ट्रीय जनसंख्या नीति का उद्देश्य था कि 2010 तक प्रजनन दर को प्रतिस्थापन स्तर तक लाया जाय। इस नीति का दीर्घकालिक उद्देश्य है 2045 तक स्थिर जनसंख्या कि स्थिति को प्राप्त किया जाय।

अध्ययन का उद्देश्य

भारत वर्ष में प्रजननशीलता एवं आर्थिक विकास करना ही इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी देश की आर्थिक विकास को अवरूद्ध करने वाले तत्वों में जनसंख्या का वृहत आकार है, एवं ऊँची वृद्धि दर महत्वपूर्ण तत्व होता है। अतः जनसंख्या के आकार एवं वृद्धि दर के कम करने में जन्म दर का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जन्मदर निर्भर करता है प्रजनन दर पर । इस प्रकार प्रजनन दर एवं जनसंख्या वृद्धि दर को नियंत्रित करते हुए अर्द्धविकसित देशों में आर्थिक विकास की दर को तीव्र करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए भारत वर्ष एवं अधिकांश विकासशील देश प्रजनन दर को कम करने के लिए अनेक कार्यक्रमों में एवं जनसंख्या संबंधि नीति का निर्माण कर उनको क्रियान्वित कर रही है।

सुझाव

भारत वर्ष में भी प्रजनन दर को घटाने के लिए ग्रामीण स्तर पर सरकार के कार्यक्रमो एवं नीतियों का व्यवहारिक रूप क्रियान्वित किया जना चाहिए । ग्रामीण स्तर पर सरकार के स्वास्थ्य एवं प्रजनन संबंधि कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने के लिए अनेक सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं को इसका दायित्व सौंपा जाना चाहिए । इस कार्यक्रम में अधिकृत सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता सहिया) की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है । सहिया को उचित प्रोत्साहन देकर ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार नियोजन कार्यक्रम को सफल बनाया जा सकता है। सहिया ग्रामीण क्षेत्रों में जमीनी स्तर पर प्रजननशीलता के संबंध में ग्रामीणों को अनेक जानकारियाँ देती है। परिवार नियोजन के संबंध में ग्रामीणों को जागरूक कर उसके उपाय बतानी है, तथा गर्भनिरोधक के संबंध में दवाएँ, विधियाँ आदि की जानकारी देती है।

सहिया के कार्यों के साथ-साथ गैर सरकारी संस्थाओं (छळ द्ध को भी इस कार्य में शामिल किया जाना चाहिए। इस कार्य का एक निश्चित अवधि में निरिक्षण एवं नियंत्रण का समन्वय किया जाना चाहिए। अतः सहिया (आशा) सरकारी स्वास्थ्य कार्यकर्ता, गैर सरकारी संस्थाओं के सम्मिलित सहयोग से ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रजनन दर को घटाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *TiM Dyson : " Indian Population" Robert Caffeine and Lila visaria (ed) Twenty first Century India(New Delhi 2004) P-86*
2. *Jean Dreze and Amartyasen, Economic Development and Social Opportunity(New Delhi-1995) P-144*
3. *Government Of India Planning Commision Eleventh Five Year Plan, 2007 (Delhi, 2008) Volume-I P-90*
4. *Government of India Ministry of Labour Bureau, Rural Labour Enquiry 1963-65 Final Report, P-151*
5. *Mehmood Mamdani, The Myth of Population control (Londan,1974), P-14*
6. *The World Bank, World Development Report 1984 (New Delhi 1984), P-51*
7. *UNFPA, State of world population 2012, P-107*